Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

गद्यगीतों में दिनेशनंदिनी डालमिया का योगदान

डॉ. अश्फ़ाक़ इब्राहीम सिकलगर, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, एवं संशोधन केंद्र, श्री. शिवाजी विद्या प्रसारक संस्था का. ना. स. पाटील साहित्य एवं मुल्ला फिदा अली मुल्ला अब्दुल अली वाणिज्य महाविद्यालय, देवपुर, धुले तहसील एवं जिला धुले (महाराष्ट्र)

प्रस्तावना

हिंदी-गद्यगीत-परंपरा में दिनेशनंदिनी का नाम सादर लिया जाता है। हिंदी-गद्यगीत-परंपरा को खड़ा करने एवं विकसित करने का श्रेय इन्हीं को जाता है। गद्यगीत तो लेखिका के लिए प्राणों के समान हैं। इनके बिना लेखिका के जीवन की कल्पना करना असंभव सा जान पड़ता है। वे हिंदी-गद्यगीत परंपरा की प्रतिष्ठित एवं चर्चित हस्ताक्षर हैं। यद्यपि मूल रूप से गद्यगीत ही उनके जीवन की साहित्य-साधना रही है, तथापि उन्होंने अन्य विधाओं में भी लेखनी चलाई है।

संबोध शब्द

गद्यगीत, हस्ताक्षर, इतिहास, प्रतिभा-संपन्न, उच्चकोटि, परिणति, भावपूर्ण, संवेदनापूर्ण, मनोहारी ढंग एवं अपलक।

विषय प्रवेश

दिनेशनंदिनी डालमिया गद्यगीतकार होने के साथ-साथ श्रेष्ठ कवयित्री, उपन्यासकार, कहानीकार भी हैं। इन सभी विधाओं पर लेखिका ने अधिकारपूर्वक लेखनी चलाई है। लिखना वास्तव में उनका धर्म है और दरअसल कम लिखना, किंतु विशिष्ट लिखना उनका लेखकीय कर्म है। अपने इस लेखकीय कर्म के बारे में दिनेशनदिनी कहती हैं कि, "लिखना मेरा धर्म है, मेरा कर्म है, मेरा यज्ञ है, अनुष्ठान है, मेरे जीवन का असर मेरे लेखन पर ही अवलंबित है। मेरे लिए यह अफीम का नशा है, विगत की स्मृति है, भाग्य का अंदाज है, केवल यही मेरा समाधान है, मेरे सहस्र प्रश्नों का उत्तर है, मेरी गूंज है। हर लेखन मेरी भीतरी परतों को खोलता है। मेरे वियोग, दुःख, जीवन, इतिहास और कभी-कभी भविष्य के लिए मुझे आश्वस्त भी करता है।"[१] व्यक्ति का व्यक्तित्व उसके कृतित्व में झलकता है' बेकन महोदय का यह कथन दिनेशनंदिनी डालमिया पर पूरी तरह चरितार्थ होता है।

वास्तव में दिनेशनंदिनी डालमिया का साहित्य उनके व्यक्तित्व का दर्पण है। उनके जीवन के हर पहलू को उनके साहित्य के माध्यम से समझा जा सकता है। 'इसमें संदेह नहीं कि दिनेशनंदिनी डालमिया असाधारण प्रतिभा-संपन्न साहित्यकार हैं। उन्होंने जिन विषम परिस्थितियों में जीवन जीया है, वह सामान्यजन के लिए कल्पनातीत है। उन्होंने अपने भावी जीवन के विषय में जो कभी सोचा भी न होगा, वह यथार्थ की कठोर भूमि पर देखा, सहा, भोगा और स्थिरचित्त बने रहकर नारी की अपराजेय शक्ति का परिचय दिया। जिस विपरीत परिस्थिति, परिवेश और परिवार में रहकर उन्होंने कलम के संबल से उच्चकोटि का पठनीय साहित्य सृजन किया वह विस्मयजनक है।'

अपने जीवनकाल में दिनेशनंदिनी डालमिया ने दस गद्यगीत-संग्रहों की रचना की। यथा-शबनम, मौक्तिकमाल, शारदीया, दुपहरिया के फूल, वंशीरव, स्पंदन, चिंतन, शर्बरी, उनमन, स्वयंभवा। इन सभी गद्यगीत-संग्रहों का संक्षिप्त पर्यालोचन इस प्रकार है-

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

दिनेशनंदिनी के लेखकीय कर्म की पहली परिणति है- 'शबनम'। यह कृति सन् 1937 में साहित्य भवन, प्रयाग (इलाहाबाद) द्वारा प्रकाशित हुई। इसे प्रकाशित करने का श्रेय महादेवी वर्मा को जाता है। उनके स्नेहिल सहयोग और सौजन्य से ही यह कृति प्रकाशित हो पाई। यद्यपि महादेवी वर्मा ने अनेक बार दिनेशनंदिनी को मना किया कि रचना उन्हें समर्पित न की जाए, लेकिन लेखिका ने अंततः रचना उन्हीं को समर्पित की। 'शबनम' उस समय की बहुचर्चित कृति रही। अपने समय में असामान्य काव्यात्मक एवं अलंकृत शैली में लिखी गई यह एक भावपूर्ण एवं संवेदनापूर्ण रचना थी। उन दिनों महिला साहित्यकारों की संख्या भी बहुत कम थी। अतएव इन दोनों कारणों ने इस रचना को अद्वितीय तथा लोकप्रिय बना दिया। अनेक पाठकों ने लेखिका के पास प्रशंसा-पत्र एवं बधाई संदेश भेजे। उसी वर्ष इस रचना को हिंदी साहित्य सम्मेलन की ओर से सर्वश्रेष्ठ रचना घोषित किया गया। फलस्वरूप इस रचना को 'सेकसरिया पुरस्कार' मिला। इससे संपूर्ण हिंदी साहित्य-जगत में हलचल मच गई।

लेखिका ने अपने इस पहले गद्यगीत-संग्रह के माध्यम से विरह और प्रेम का अद्‌भुत सामजंस्य प्रस्तुत किया है। एक-एक शब्द में संवेदना भरी हुई है। अपने रूठे प्रेमी को मनाने के लिए एक प्रेमिका या विरहिणी क्या कहती है? लेखिका के शब्द चित्र देखिए- "मेरे यौवन में वैकल्य है, सौंदर्य में आकर्षण है, अधरों में मदिरा है, आँचल में प्रसून है, आत्मा में महामिलन के स्वप्न हैं और प्रेम में पारिजातों का परिमल। रूठे सजन् तुम्हें मनाने के लिए क्या उपहार लाऊँ।"[२]

लेखिका का वियोग महादेवी वर्मा सरीखा है। वे विरह में स्वयं को तोलती हैं। दुःख हो उनके जीवन का आधार है, वे कहती हैं, "यदि मैं दीप-शिखा होती तो तुम्हारे निर्दिष्ट जीवन-पथ को आलोकित करती, यदि मैं कल्पना होती तो तुम्हारी कविता को नवीन युग के स्वप्नों से राग-रंजित बना चराचर को भावों की उड़ान और भाषा की माधुरी से मुग्ध करती।"[३]

'शबनम' की सफलता से उत्साहित होकर दिनेशनदिनी डालमिया ने अगले ही वर्ष सन् 1938 में दूसरा गद्यगीत-संग्रह प्रकाशित करवाया। यह 'मौक्तिकमाल' के नाम से प्रकाशित हुआ था। इसे भी लोगों ने उतना ही स्नेह और आशीर्वाद दिया जितना कि 'शबनम' को। इस संग्रह के बारे में लेखिका ने कहा है, "गीत वही हैं पर अर्थ वे नहीं रहे। मूल भाव एक ही था, किंतु अंतर्गत कितने संचारी भाव जो तब मेरी भी समझ में न आते थे, आज स्पष्ट हैं। उन दिनों कल्पना की दौड़ के सामने जीवन पंगु था- आज जीवन दौड़ रहा है।"[४]

लेखिका के कहने का भाव यही है कि जीवन और बदलती परिस्थितियों ने उसके गद्यगीतों के मूलभाव भी बदल दिए हैं। प्रकृति के यौवन का चित्रण लेखिका ने बड़े मनोहारी ढंग से किया है तेरे सुकुमार नव हृदय पौधे के निखरते हुए सुमन को मैंने खिलते हुए देखा मेरा अपलक आकर्षक उत्कंठा की सीमा पार कर चुका था । वायु के मंद झोंकों से सुगंध का अनुभव हुआ। सौंदर्य निरखने की आतुर पिपासा खींचकर निकट ले गई अलसाए यौवन ने प्रस्फुटित यौवन से नयन मिलाए।

सन् 1939 में लेखिका का तीसरा गद्यगीत-संग्रह 'शारदीया' प्रकाशित हुआ। पहले प्रकाशित दोनों रचनाओं से यह रचना अपेक्षाकृत अधिक प्रौढ़ है, जो कि स्वाभाविक है। स्वयं लेखिका इस रचना के बारे में लिखती हैं कि, "आशा के झीने मेघावरण से निकली हुई शारदीया, यौवन के शौर्य-स्निग्ध अश्रुओं से धुली हुई शारदीया, प्रेम की पुलक पर रीझी हुई शारदीया, जीवन और मृत्यु से झगड़ती हुई शारदीया तुम्हें समर्पित कर कृतार्थ हुई, क्योंकि मैंने तुम्हारे हृदय में स्वर्ग की शारदीया देखी और उसने मेरे पथ को प्रकाशमान किया।"[५] समर्पण का यही भाव इस रचना का मूलभाव है। इस गद्यगीत-संग्रह में नारी और जीवन के अनेक रंग भरे पड़े

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

हैं। इसलिए कुछ गद्यगीत रहस्यवादी भी जान पड़ते हैं। नारी-मन का चित्रण करते हुए लेखिका लिखती हैं, "कौन जानता है कि नारी के हृदय में क्या भरा पड़ा है, बसंतश्री-रहस्य, निदाघ की निष्ठुरता, वर्षा का घन-ममत्व, शरद दामिनी का पुलकित हास, हेमंत की आशामंडित मधुर वेदना, शिशिर का आतंक और अंतर्दाह, लाडलों के प्रति अपरिसीम वात्सल्य कल्याण-सिंधु के अनंत बुदबुदों के प्रति दयाभाव, प्रीतम के पुनीत पादारविंदों के प्रति अंबर-सा असीम प्रेम और जीवन के लिए माया-मोह और अवहेलना, यही तो उसका गीत है और इसी से उसकी वीणा के तारों में हृदय की करुण क्रंदन से कंपित कर देनेवाली अद्‌भुत शक्ति है।"[६] कौन जानता है कि नारी के हृदय में क्या भरा पड़ा है।

इसी प्रकार मिलन की चिर प्रतीक्षा को लेखिका ने इन शब्दों के माध्यम से प्रस्तुत किया है, "मिलने से प्रतीक्षा की महिमा मानव के हृदय में अपरिसीम है, क्योंकि उसमें क्लातिकारी पीड़ा का आभास नहीं मिलता।"[७] लेखिका के पहले तीनों गद्यगीत एक-एक वर्ष के अंतराल पर प्रकाशित होते रहे, लेकिन चौथा गद्यगीत-संग्रह 5 वर्षों के लंबे अंतराल के बाद आया अर्थात् 'दुपहरिया के फूल' नामक गद्यगीत संग्रह सन् 1944 में प्रकाशित हुआ। यह गद्यगीत-संग्रह इन्होंने पं. जवाहरलाल नेहरू को समर्पित किया है। प्रस्तुत गद्यगीत-संग्रह का नामकरण और पं. नेहरू को समर्पित करने के पीछे एक रोचक घटना है। एक बार लेखिका नेहरू जी से मिलने वर्धा गईं। वहाँ वे उनके साथ लगभग दो घंटे रहीं। इसी बीच राष्ट्रीय एवं सामाजिक दोनों प्रकार की समस्याओं पर चर्चा हुई। ये अपने साथ अपने कुछ अप्रकाशित गद्यगीत भी ले गई थीं, जो इन्होंने उन्हें दिखाए और उन्हें पसंद आने पर उनका संकलन उन्हीं को समर्पित करने की इच्छा व्यक्त करते हुए उनसे अपने एक चित्र पर हस्ताक्षर करने का अनुरोध किया। बाद में यह संकलन 'दुपहरिया के फूल' नाम से प्रकाशित हुआ। नेहरू जी से इनकी भेंट दोपहर के समय होने के कारण ही इस संकलन को 'दुपहरिया के फूल' नाम दिया गया। इस संग्रह के गद्यगीतों में प्रकृति के रहस्य का चित्रण प्रमुखता से हुआ है, "प्रकृति के अदृश्य हाथों ने अंतरिक्ष से अंतराल में वनस्पति के बीच छितराए और मेदिनी और भूधर हरीतिमा से ढक गए।"[८]

दिनेशनंदिनी डालमिया स्वयं को कई वर्षों तक राधा समझती रही हैं। यह बात उनके गद्यगीतों में स्थल-स्थल पर प्रकट हुई है। 'दुपरिया के फूल' शीर्षक गद्यगीत-संग्रह के कई गीत में लेखिका ने अप्रत्यक्ष रूप से अपने इस रूप को उद्घाटित किया है, "कालिंदी के कुसुमित फूल यमुना पुलिन के आन-निकुंजों को माधवी लता का आलिंगन करते देख मेरा हृदय टूक-टूक होता है। क्योंकि मथुरा गमन के पूर्व मैं भी श्याम को मेरे मृणाल बाहुपाशों में ऐसे ही बाँध लेती थी।"[९] चिर प्रतीक्षा का हृदयविदारक वर्णन इस संग्रह के गीतों में दिखाई देता है। यथा- अंबुधि के उस पार जुगनू बालाओं की ज्योति चुराकर मैंने तुम्हारी प्रतीक्षा की आँधी आई, तफ़ान आए, बादल बिखर गए पर केवल तुम न आए, क्षितिज के आँचल में आँसुओं का ताज बनाकर मैंने मिलन के स्वप्न सजाए।

इस गद्यगीत संग्रह की रचना सन् १९४५ में हुई थी। इस संग्रह में लेखिका का राधा रूप और अधिक मुखर हुआ है। विनयमोहन शर्मा ने इस गद्यगीत-संग्रह की समीक्षा स्वरूप लिखा है कि, "वंशीरव के उच्छ्वासों से जिस राधा का यह रूप चित्रित हुआ है, उसमें हम विरहाकुल प्रतीक्षा के अश्रु ही नहीं देखते, मिलन के मधुर क्षणों का उल्लास भी विलसते हुए पाते हैं, पर ऐसा प्रतीत होता है कि 'मिलन' की सत्यता पर दिनेशनंदिनी की राधा का विश्वास नहीं है। विद्यापति की राधा के समान वह भी यह अनुभव करती है, यह स्वप्न है या प्रत्यक्ष है? यही कारण है कि मिलन का हर्ष अधिक समय तक नहीं ठहर पाता, वह कमल पत्र पर निपतित ओस-कण के समान शीघ्र ही ढरक जाता है। वंशीरव की राधा एक भोली विवेकशून्य और भावुक नारी है, जो

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

प्रत्येक सौंदर्य में अपने आराध्य को देखना चाहती है पर अधिक समय तक उस पर आँखें जमा नहीं पाती।"[१०] अपने अन्य गद्यगीत संग्रहों की तरह लेखिका ने प्रस्तुत संग्रह में भी मिलन-विरह की अभिलाषा के अनेक शब्द-चित्र खींचे हैं। उनकी काव्यात्मक प्रौढ़ता, उनको नवोन्मेषशालिनी प्रतिभा का परिचय प्रत्येक गद्य पंक्ति में मिल जाता है।

वंशीरव के प्रकाशित होने के बाद सन् 1947 में इनका छठा गद्यगीत संग्रह 'उनमन' छपा। इसके गद्यगीतों में प्रेम, सौंदर्य, मृत्युबोध, प्रकृति समय, रात-दिन, जीवन-दर्शन आदि विषयों का चित्रण व्यापक स्तर पर हुआ है। इसमें कुछ परस्पर विरोधी संवेदनाएँ भी हैं। जब दिनेशनंदिनी डालमिया से इस संदर्भ में पूछा गया, तो वे बेबाकी से कहती हैं कि 'सोच-समझकर लिखने जैसा यह काव्य नहीं है। जो मन में आया, वही कलम ने बेझिझक उतार दिया।

आगा-पीछा कुछ नहीं देखा। बिना सोचे जो प्रवाह आया, उसे बिना रुकावट के बिना सजावट के वैसा का वैसा उतार लिया। लोग क्या कहेंगे, उनका मेरे लिए क्या ख्याल बनेगा, ऐसा मेरे मन में आया ही नहीं।' लेखिका के कहने का भाव यही है कि उन्होंने मुक्त-भाव से अपनी आत्मा अभिव्यजित की है। अपने गद्यगीतों की मूल-भावना को लेखिका ने इन शब्दों में अभिव्यक्त किया है, "रावण द्वारा हरी गई सीता ने आकाश मार्ग से गमन करते हुए वियोगी राम को पथ जानने के लिए अपने आभूषण बिखेरे थे। मैं भी इस गहन वन में साधन-पथ के अमर पथिकों के लिए ये गीत के गहने बिखेर रही हूँ, जिससे वे मेरे चले हुए मार्ग पर चलकर मुझ तक पहुँच जाएँ।"[११]

दिनेशनंदिनी डालमिया का यह गद्यगीत-संग्रह 'उनमन' के बाद प्रकाशित हुआ। उस संग्रह का आश्रय सत्य वही है, जो 'उनमन' का है लेकिन अभिव्यक्ति स्तर पर यह बिल्कुल अलग है। स्वयं लेखिका के शब्दों में 'स्पंदन का आश्रय सत्य वहीं है, जो उनमन का है पर अभिव्यक्ति बिल्कुल भिन्न है जो पाठक की पैनी दृष्टि से सुरक्षित न रहेगें।

स्पंदन के पश्चात् लगभग 12 वर्षों के अंतराल पर सन् 1959 में 'चिंतन' शीर्षक काव्य आया। इस गद्यगीत-संग्रह में लेखिका का रहस्य और प्रेम और अधिक प्रौढ़ होता दिखाई देता है। जैसे शिला से अग्नि मिश्रित जल का सोता फूटता है, मौत के मस्तिष्क पर जीवन के ओज से रस प्लावित पुष्प खिलते हैं और गूँगे की मोहांध आँखों में अनुभूति के बोल आकृति लेते हैं, उसी तरह अचित्य ही 'चिंतन' का चित्रण हुआ है। अपने शीर्षक के अनुरूप ही इस संग्रह के गद्यगीतों में दार्शनिकता एवं चिंतन की पराकाष्ठा है। कभी प्रेमिका बनकर, तो कभी सर्वस्व लुटाकर नारी पुरुष को संवेदनहीन होने से बचाने का सार्थक प्रयास करती है। सन् 1962 में 'शर्वरी' नामक गद्यगीत-संग्रह छपा। इस कृति में लेखिका की लेखकीय एवं मानसिक प्रौढ़ता अपने चरम पर पहुँच गई है। 'उषाकाल की 'शबनम' में जो उल्लास को झंझा बह रही थी, वह अब जीवन की संध्या में शांत-सी प्रतीत होती है। मुझमें अब एक सहज अन्यनस्कता आ गई है और शर्वरी के गीत शायद उसी के प्रतीक हैं।' 'स्वयंभवा' नामक कृति का प्रकाशन सन् 1995 में हुआ। लगभग 33 वर्षों के लंबे अंतराल के बाद दिनेशनंदिनी का यह अंतिम गद्यगीत-संग्रह प्रकाशित हुआ। इस संग्रह के बारे में विद्यानिवास मिश्र लिखते हैं कि, "इसीलिए इनके गीतों में सनातन वैष्णव राग नया कलेवर लेकर उपस्थित हुआ है और कहीं-कहीं बाउल गानों की गूंज को अनुप्राणित भी कर देता है।"[१२]

संदर्भ ग्रंथ

१. गोयनका कमलकिशोर, दिनेशनंदिनी डालमिया से बातचीत, पृ. क्र. १०२

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

२. डालमिया दिनेशनंदिनी, रचनावली, खंड-१, पृ. क्र. ३०
३. डालमिया दिनेशनंदिनी, कुछ कही न गई, पृ. क्र. ५५
४. डालमिया दिनेशदिनी, दो शब्द, शारदीया, पृ. क्र. ११८
५. डालमिया दिनेशनंदिनी, रचनावली, शारदीया, पृ. क्र. १४६
६. चतुर्वेदी अर्चना (संपा.), दिनेश नंदिनी डालमिया कृतित्व के विविध आयाम, पृ. क्र. २६
७. डालमिया दिनेशनंदिनी, रचनावली, दुपहरिया के फूल, पृ. क्र. १६९
८. गोयनका कमलकिशोर, दिनेशनंदिनी डालमिया से बातचीत, पृ. क्र. १२०
९. डालमिया दिनेशनंदिनी, स्पंदन, पृ. क्र. ३५४
१०. दिनेशदिनी डालमिया रचनावली, खंड-१, पृ. क्र. ४०५
११. डालमिया दिनेशनंदिनी, शर्वरी दो शब्द, पृ. क्र. ५०९
१२. डालमिया दिनेशनंदिनी, स्वयंभवा, पृ. क्र. ६२४

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved